International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-07-2020; Accepted: 11-08-2020; Published: 27-08-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 139-141

भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं का व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोणः समीक्षात्मक अध्ययन

कुमारी सोनम
एम. ए. (गृह विज्ञान), पी.एच.डी, आवास–4सी.–रूक्मी ब्लाक, मुकुंद कुंज अपार्टमेंट, पटना, बिहार, भारत

सारांश
मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज की संरचना किसी न किसी व्यवस्था से अवश्य जुड़ी होती है। समाज की एक बहुत बड़ी आबादी व्यवसाय से जुड़े हैं। चाहे वह पुरुष हों या महिला। आज समय की भी यही माँग है कि हर व्यक्ति अपनी योग्यता से किसी काम को करे जिसमें उसकी अभिरुचि हो। साथ ही समाज को भी यही अपेक्षा रहती है कि व्यक्ति सामाजिक परिस्थिति के अनुकूल किसी भी परिस्थिति में उस विशेष भूमिका का वह पालन करें जो उसकी परिस्थिति की माँग है। यही व्यवस्था व्यक्ति की परिस्थिति एवं भूमिका का संतुलन करने में मदद करता है।

मूल शब्दः कामकाजी, व्यवसाय, अर्थोपार्जन, घर–गृहस्थी, मध्यमवर्गीय

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध आलेख 'भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं का व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण' को केन्द्र में रखकर उसके कार्यशैलियों को प्रतिष्ठित किया गया है। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत किसी काल विशेष में किसी व्यक्ति का जो पद या स्थान प्राप्त होता है उसे उसकी परिस्थिति माना जा सकता है जैसा कि लिंटन का मत है। वह इन्हीं क्रिया–कलापों से आवद्ध होकर कार्य को मूर्त्त रूप देने का भरसक प्रयास करता है। ये सारी बातें मनोवृत्तियों, व्यवहारों एवं सामाजिक मूल्यों से आवद्ध होता है। प्रत्येक समाज में पुरुष और महिला के पारस्परिक सम्बन्धों एवं भूमिकाओं का प्रचलित संस्कृति के आधार पर निश्चय एवं नियमन होता है। संस्कृति यह नियमित करती है कि पुरुषों एवं महिलाओं में पारस्परिक संबंध कैसे हो और इनके अनुरूप उनकी भूमिका कैसी हो।1

प्राचीन भारतीय समाज में खासकर वैदिक काल में पुरुष एवं महिला की सामाजिक स्थिति समकक्ष थी। कालान्तर में इनके सम्बन्धों एवं भूमिका में भी परिवर्त्तन दृष्टिगोचर होने लगा। ऐसे संरचना एवं प्रकृति के अधीन यह सार्वभौम सत्य है कि पुरुष का प्राथमिक एवं मुख्य कार्य अर्थोपार्जन करना एवं महिला का गृहलक्ष्मी के रूप में घर की देखभाल एवं बच्चों का लालन–पालन करना मुख्य कार्य होता है। अतीत से ही ऐसी सामाजिक ताना–बाना बना हुआ है जहाँ महिलाएँ घर गृहस्थी को संभालती है। महिलाएँ शिक्षित हों या अशिक्षित उनका प्रथम उत्तरदायित्व घर के कार्यों को संपादित करना है।2

हमारे देश की भौगोलिक स्थिति स्थिर है। लेकिन इस प्राकृतिक भौगोलिक सीमाओं के अन्दर बढ़ती आबादी ने मानवीय जीवन की सोच और कार्यशैलियों को प्रभावित किया। इस पुरुष प्रधान देश में जहाँ पुरुष घर से बाहर जाकर अर्थोपार्जन करते थे और महिलाएँ घर को चलाती थी। ऐसी गृहिणी महिलाएँ ही घर को स्वर्ग से सुंदर बना पाती थी। जो यह स्थिति आज भी है। घर को सुचारु रूप से महिलाएँ ही चला सकती है। इसे झुठलाया नहीं जा सकता है। ऐसा इसलिए कि वह घर की लक्ष्मी के साथ–साथ ममता की प्रतिमूर्त्ति होती है। इन ममता की बिखरती बुंदों से सब का मन मोह लेती हैं। इससे घर का वातावरण ही बदल जाता है।

मध्यकाल में भारतीय महिलाएँ शोषण का शिकार हुई। ऐसे तो सम्पूर्ण विश्व में महिला अपनी स्वतंत्रता के लिए आगे आयी और तब कहीं उन्हें अपनी बात को रखने का मौका मिल पाया। लेकिन बढ़ती आबादी का असर इन महिलाओं पर भी पड़ा। खासतौर से इसका असर इनके घरों में साफ दिखाई देने लगा और वे पुरुषों के साथ हाथ बँटाने को तैया हुई।

महिला प्रायः घर की चहारदिवारी से बाहर दो कारणों से अर्थोपार्जन की ओर उन्मुख हुई। प्रथम तो शिक्षा और योग्यता एवं प्रतिभा का समुचित उपयोग करने की दृष्टि से महिलाएँ अर्थोपार्जन के लिए आगे आयी। इससे उनकी समाज में प्रतिष्ठा के साथ–साथ आर्थिक स्थिति में काफी सुधार आया। द्वितीय, वे महिलाएँ हैं जिन्हें आर्थिक परिस्थितियों ने घर से बाहर निकलने को विवश कर दिया। फलतः वे अर्थोपार्जन की आवश्यकता को देखते हुए अपनी योग्यता के अनुसार काम करने लगे। परिस्थिति चाहे जो भी हो महिला अर्थोपार्जन करने के साथ–साथ अपनी प्राथमिक पारिवारिक भूमिका गृहस्थी का संचालन एवं बच्चों का लालन–पालन छोड़ नहीं सकती। इस प्रकार उसकी आर्थिक उद्यम भी द्वितीय कार्य ही है।3

अब प्रश्न उठता है कि अर्थ उपार्जन किसी न किसी व्यवसाय के द्वारा ही किया जा सकता है। व्यवसाय के चयन में विभिन्न कारक क्रियाशील होत हैं। सामाजिक परम्परायें, शिक्षा–दीक्षा, रूचि, निजी जीवर स्तर ऐसे कुछ प्रमुख एवं विभिन्न कारण हैं जो विभिन्न अनुपात में व्यवसाय–चयन में घात– प्रतिघात करते हैं। जहाँ तक महिलाओं का सवाल है उनका क्षेत्र और भी सीमित और संकुचित हो जाता है। विवाहित महिलाओं के लिए तो विशेष रूप से, क्योंकि उनका प्राथमिक कार्य ही बच्चों का लालन–पालन एवं गृहस्थी निर्माण एवं परिचालन है। स्वाभाविक है महिलाएँ किसी ऐसे ही व्यवसाय की ओर अधिक अभिरूचि दिखाती है जिससे उनके प्राथमिक भूमिका पर अनाधिक प्रभाव पड़े और आर्थिक आय भी हो और स्थान सम्मानित हो।4

शिक्षित महिलाएँ जिन विशिष्ठ परिस्थितियों में अभी जीवन–यापन कर रही हैं वहां की सामाजिक अपेक्षाओं एवं मान्यताओं की उपेक्षा भी नहीं कर सकतीं। अपने लिये व्यवसाय का चयन करते समय उन्हें स्मरण रखना पड़ता है कि उन्हीं व्यवसायों की ओर वे झुकें जिसे समाज सम्मानित दृष्टि से देखता है। क्योंकि इस पारस्परिक सामाजिक ढांचों के अंतर्गत ही उन्हें रहना है और व्यवसाय का चयन भी करना है। सत्य है कि आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण ने बहुत सारी मान्यताओं की जड़ पर प्रहार किया है पर आज भी समाज का आन्तरिक ढाँचा वैसे ही प्रभावकारी एवं

अंतःक्रिया से संपादित है। यही कारण है कि महिलाओं के लिये घर से बाहर विशिष्ठ व्यवसाय के ही सामाजिक रूप से सम्मान प्राप्त है। अन्य व्यवसायों के संबंध में, जो आधुनिक तो है, सामाजिक मान्यता तथा पारिवारिक स्वीकृति शंका का विषय है, प्रायः संदिग्ध ही है।5

नारी जब अर्थोपार्जन के लिये घर से बाहर पग निकाल देती है तो इसका सीधा प्रभाव पारिवारिक सम्बन्धों पर पड़ने लगता है। कार्यकारी महिला को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। उसे अपनी भूमिका का भी समुचित निर्वाहन करना पड़ता है, साथ ही अपनी व्यावसायिक भूमिका का। यदि परिवार के साथ कार्यकारी महिला के सम्बन्ध सामान्य है तब तो व्यावसायिक कार्य भी संतुष्टिकारक होगा अन्यथा कार्यकारी महिला के लिये सर्वथा संघर्षपूण।। यह भी जन सत्य है कि सामंजस्य की स्थिति अपनी आकांक्षाओं एवं विवेक–व्यक्ति पर निर्भर करती है जैसे–कार्य–संतुष्टि के सम्बन्धों में पेस्टनजी ने चार प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख किया है, जिनका समग्र रूप है कार्य–संतुष्टि यथा6–

1. कार्य, कार्य की प्रकृति – रुचिकर, अरुचिकर, खतरनाक, कार्य के घंटे, प्रोन्नति के अवसर, आदि।
2. प्रबंधन – निरीक्षण–प्रक्रिया, व्यवहार, अवकाश नीति, पुरस्कार एवं दण्ड आदि।
3. सामाजिक सम्बन्ध – सहयोगी, मित्र, पड़ोसी, जाति एवं जाति–बंधन, आदि।
4. व्यक्तिगत परिस्थिति – स्वास्थ्य, गृह एवं आवासीय स्थिति, आर्थिक–पृष्ठभूमि, पारिवारिक सम्बन्ध, आदि।

कार्य संतुष्टि अतएव विभिन्न सह–सम्बन्धी कारकों के आघात प्रत्याघात का परिणाम है–पारिवारिक सम्बन्ध कार्य–स्थान तथा स्थिति कार्य–संतुष्टि में सबसे वृहत योगदान करती है। कार्य–संतुष्टि का ही एक पक्ष यह भी है कि उनकी इस भूमिका से पारिवारिक सदस्य कहाँ तक संतुष्टि दिखाते हैं।

कोई भी व्यक्ति अपने व्यवसाय के चयन के क्रम में किसी एक कारण को निश्चित रूप से नहीं बता सकता। अनेकानेक कारण हो सकते हैं, यथा–निजी अभिरुचियों तथा प्रवृत्तियों, आर्थिक परिस्थिति, कोई सामाजिक भार अथवा प्रायः संयोग भी। करुणा शाह ने अपने अध्ययन में भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री के. जी. सैयदेन के विचार का उल्लेख करते हुए कहा है कि – ''निःस्संदेह किसी व्यवसाय को अपने मनोनुकूल पाना यह सिद्ध करता है कि उस कार्य का स्वरूप ही ऐसा है जो कार्यकर्मी के मन एवं भावना के अनुरूप हो।

मध्यमवर्गीय कार्यकारी महिलाओं के व्यवसाय में निरत होने अथवा अर्थोपार्जन के काम में संलग्न होने का मुख्य कारण केवल परिवार को आर्थिक सहयोग देना ही नहीं है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अपने–अपने अध्यनन में अपना अभिमत प्रकट किया है। प्रमिला कपूर, के. के. अरोड़ा, भट्टाचार्य, वर्मा, नरुला, वसन्त कुमार, दोहरी, घिंगरा आदि की धारणा है मध्यमवर्गीय कार्यकारी महिलाएं आर्थिक विवशता के ही कारण अर्थोपार्जन नहीं करती, बल्कि इसके भिन्न–भिन्न कारण है जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसके मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कई उत्प्रेरक तत्त्व हैं।7

वर्मा ने 57.5 प्रतिशत, जौहरी ने 62 प्रतिशत तथा श्रीवास्तव ने 60 प्रतिशत मध्यमवर्गीय कार्यकारी महिलाओं को आर्थिक कारणों से विवश होकर अर्थोपार्जन में निरत पाया। उच्च पद–प्रतिष्ठा की अपेक्षा एवं आत्मनिर्भर होने की लालसा भी इन मध्यमवर्गीय कार्यकारी महिलाओं में अर्थोपार्जन के लिए उद्यम करने के लिए कई एक को उत्प्रेरित किया।

व्यवसाय चुनाव के कारण

व्यवसाय चुनाव के कारण	उत्तरदायित्वों के व्यवसाय का स्तर			
	नौकरी	श्रमिक	स्वतंत्र व्यवसाय	योग
परिवार को आर्थिक सहादयता देने के लिए	3(1.7)	33(41.7)	27(52.9)	63(21.0)
अवकाश का उपयोग	56(74.6)	17(21.5)	2(3.9)	75(25.0)
आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए	21(44.6)	17(26ण1)	19(29.2)	65(21.6)
उच्च पद की आकांक्षा	20(86.9)	2(8.6)	1(4.3)	23(7.6)
व्यवसाय में अभिरुचि एवं शिक्षा के उपयोग हेतु	62(83.7)	10(13.5)	2(2.7)	74(24.6)
योग	162(100.0)	79(100.0)	51(100.0)	300(100.0)

सारणी में स्पष्टतः व्यवसाय–चयन को ध्यान में रखा गया है, तीन प्रकार के वर्गों में व्यवसाय की कोटि को विभाजित कर विश्लेषण किया गया है कि किन–किन कारणों से वशीभूत होकर उस व्यवसाय का चयन किया गया।

प्रस्तुत तालिका के अनुसार मात्र आर्थिक विवशता एवं पारिवारिक सहायता को ध्यान में रखकर 21 प्रतिशत कार्यकारी महिलाएँ विभिन्न व्यवसाय में लगे है। इस कार्यकारी महिला समूह में से 1. 7 प्रतिशत तो नौकरी में लगी है, 41.7 प्रतिशत श्रमिक का कार्य करती है तथा स्वतंत्र व्यवसाय में 52.9 प्रतिशत लगी हुयी है।

कार्यकारी महिलाओं के उस वर्ग में जिनमें विभिन्न व्यवसायों में लगने का कारण अपने समयावकाश का उपयोग करना है, 25 प्रतिशत आती है। इनमें से 74.6 प्रतिशत तो नौकरी करती हैं 21. 5 प्रतिशत क्रमिका रूप में कार्यरत हैं तो शेष स्वतंत्र व्यवसाय में भाव 3.9 प्रतिशत लगी हुई हैं।

कार्यकारी महिलाओं में 21.6 प्रतिशत ऐसी पायी गयी जो किसी आर्थिक दबाव के कारण नहीं अपितु आर्थिक रूप से निर्भर होने के लिए व्यवसाय में लगी हुई है। इनमें से 44.6 प्रतिशत तो नौकरी करती है, 26.1 प्रतिशत श्रमिक का कार्य करती हैं और 29.2 प्रतिशत स्वतंत्र व्यवसाय में निरत हैं।

लगभग 7.6 प्रतिशत कार्यकारी महिलाएँ विभिन्न व्यवसायों, उच्च पदाकांक्षा से क्रियाशील है। इनमें 86.9 प्रतिशत नौकरी में है, 8.6 प्रतिशत श्रमिक हैं तथा 4.7 प्रतिशत स्वतंत्र व्यवसाय में कार्यशील है। अपनी शिक्षा के उपयोग एवं निजी अभिरुचि की तृप्ति के लिए 24.6 प्रतिशत कार्यकारी महिलाएँ भिन्न–भिन्न व्यवसाय में निरत है। इनमें से 83.7 प्रतिशत तो नौकरी में हैं, 13.5 प्रतिशत श्रमिक के रूप में लगी है। तो 2.7 प्रतिशत स्वतंत्र व्यवसाय में संलग्न है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि पारिवारिक आर्थिक सहायता की दृष्टि से व्यवसाय में निरत कामकाजी महिलाएँ एक चौथाई से भी कम हैं। अन्य कारण भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं जिनके कारण महिलाएँ विभिन्न व्यवसायों में संतुलन बनाये हुए है। यह देखा जा सकता है कि अवकाश का उपयोग, उच्च पदमान की आकांक्षा, अपनी शिक्षा का उपयोग, आत्म–निर्भर होने की उच्चतम लालसा तथा

निजी अभिरुचियों ने भी महिलाओं को कामकाजी होने के लिए प्रेरित किया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि गैर–आर्थिक कारणों से उत्प्रेरित सबसे अधिक महिलाएँ नौकरी में ही लगी हैं। शिक्षित महिलाओं में गृहकार्य से भागने की प्रवृत्ति, मुक्ति एवं अप्रतिबद्ध तथा स्वतंत्र रहने की आकांक्षा तथा पारिवारिक उत्तरदायित्व से कुछ समय के लिए मुक्ति भी इन्हें कामकाजी बनने को उन्मुख करती है। हाँ श्रमिक जैसे व्यवसाय को चुनने के लिए आर्थिक विवशता की मूल एवं मुख्य कारण है।

संदर्भ सूची

1. लिंठन, आर. अः 'दी स्टडी ऑफ मैन–इन इन्ट्रोडक्शन', न्यूयार्क एम्लेटन, 1964, पृ.–74
2. ऋग्वेद, 1.82.4
3. अल्टेकर, ए. एस.ः दी पोजीशन ऑव वुमन इन हिन्दू सिविलाइजेशन', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1962
4. प्रमिला कपूरः 'दी चेन्जिंग स्टेट्स ऑफ दी बर्किंग वूमेन इन इंडिया', विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974, पृ.–54
5. नरूला, यू. : 'इंडियन वूमेन इन चेन्जिंग सोसाइटी', सोशल वेलफेयर, 1967, 14ः 4.
6. पेरटनजी, डी. एमः 'ऑर्गनाईजेशन स्ट्रक्चर एण्ड जॉब एटीब्यूड्स', दी मिनवे एसोसिएट्स, कलकत्ता, 1973, पृ.–21
7. वर्मा, एमः 'दी स्टडी ऑफ मिड्ल क्लास वर्किंग वूमेन इन कानपुर ऑकरिंग इन कला देवी कंपनी बुक स्टेट्स एण्ड एम्पोलायमेंट इन इंडिया', 1964.